चुप से पहले रुदन है-चुप के बाद कविता

युवा कवि गुरमीत बराड़ ने बेहद कम समय में पंजाबी साहित्य में अपनी विशिष्ट जगह बनाई है। तीन कविता संग्रह प्रकाशित। पंजाब सरकार के 'गुरमुख सिंह मुसाफ़िर' पुरस्कार से सम्मानित।

-सम्पादक

पंजाबी और हिन्दी के मूल्यों में क्या मूलभूत अंतर है, जबकि संवेदनाएं, भावनाएं परिस्थितियां सब कुछ समान है?

हिन्दी और पंजाबी के भाषागत मूल्य समान है, दोनों भाषायें इंडो-यूरोपियन भाषा परिवार का हिस्सा है, दोनों भाषाओं का सनातन साहित्य काव्य रूप में लिखा गया है। कालांतर में पंजाबी कविता ने एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित रहने के कारण अपनी अलग पहचान बनाई है। हिन्दी में जहां साहित्य के सरोकार बेहद विस्तृत है वहीं पजाबी में ये एक हद तक सीमित है।

आपकी काव्य पुस्तक 'चुप तो मगरों' को अभी पंजाब सरकार का 'गुरमुख सिंह मुसाफिर' सम्मान मिला है, जबकि आपकी यह पुस्तक छपने के कुछ समय पश्चात ही चर्चा में आ गई थी, इस बारे में बताएं।

मेरे पहले काव्य संग्रह 'पड़छावयां दे मगरो मगर' के पश्चात मेरे पाठकों की संख्या में उत्तरोतर वृद्धि हुई तथा दूसरे काव्य संग्रह 'चुप तो मगरों' का प्रकाशन हुआ, जिसमें व्यक्तिगत रूप से मैंने अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व कविताओं की रचना करने का प्रयास किया। कन्या भ्रूण हत्या की कुप्रथा के चलते मैंने यह संग्रह अजन्मी बेटियों को समर्पित किया है। इस संबंध में इस संग्रह की 'चिड़ियां दा सिरनावां' नाम की कविता पुस्तक के प्रकाशन से पूर्व ही पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में कन्याभ्रूण हत्या विरोधी रैलियों, प्रभात फेरियों तथा पंजाब के कुछ विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं में पढ़ी जाने लगी। राजस्थानी भाषा के पाठकों के लिये 'जागती जोत' में 'चिड़िया रो ठौर' नाम से इसे अनूदित किया है। इसमें कुछ छियालीस कविताएं हैं, जिनमें अधिकतर छंद मुक्त था कुछ प्रगीत हैं। लगभग सभी कविताएं त्रिशंकु, प्रतिमान, अक्खर, संख, लकीर आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा कनाडा के खबरनामा व अन्य चैनलों के साहित्यिक कार्यक्रमों से प्रसारित हो चुकी है। अमेरिका की एक लेखिका लाओरा क्लिवनटाना वर्तमान में इस संग्रह को अंग्रेजी व स्पेनिश में एक साथ अनूदित कर रही है। वह प्रत्येक अनूदित कविता के साथ

Scanned by CamScanner

उस कविता के परिप्रेक्ष्य में पेंटिंग्स भी बना रही हैं। सभी का भावानुवाद न हो सकने तथा सांस्कृतिक असमानता के कारण कुछ कविताएं छोड़ दी गई हैं।

अलोचकों की राय है कि आपकी कविताएं पंजाबी गीतकार 'शिव बटावली' की परम्परा की है। क्या आप अपने पर शिव का प्रभाव या ऐसा ही कुछ स्वीकारते हैं?

कुछ आलोचक शिव पर भी जॉन कीट्स का प्रभाव मानते हैं। मेरी प्रारंभिक कविताओं के शिव के प्रभाव का आभास होता है, इसका कारण शायद यह रहा हो कि मैंने अपने जीवन में पहली पुस्तक जो पढ़ी थी, वो थी शिव बटालवी की मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी अरुणा शिव बटावली द्वारा संपादित काव्य संग्रह 'बिरहड़ा'। यह उस समय की बात है, जब मैं कक्षा चार का छात्र था, उस अवस्था में परंतु उसके बाद मैंने शिव के सभी संग्रह पढ़े, लेकिन शिव के व्यक्तिगत जीवन से कोई समानता नहीं रही। इसलिये मेरी कविताओं की विषयवस्तु शिव के समान नहीं है। शब्दावली तथा शब्द युग्म शिव की परम्परा के हो सकते हैं, विषय वस्तु शिव और पाश के मध्य कहीं है। दोनों मेरे पसंदीदा शायर हैं। शिव की अपेक्षा पाश की कविता बहिर्मुखी तथा बहुआयामी है।

आपकी कविता के प्रेरणा स्त्रोत क्या है? आपकी कविता में आंचलिकता को इतना महत्व क्यों दिया?

मैं स्वाध्याय एवं स्वचिंतन में संलग्न रहते हुए बाहरी वातावरण के संप्रेषण की स्थिति में रहता हूँ, जिससे प्रेरणा के स्त्रोत बन जाते हैं, शर्त यह है कि आप आंतरिक और बाहरी रूप से सचेत और संवेदनशील रहें।

पंजाबी भाषा से उसके अपने ठेठ शब्द धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। लुप्त हो रही शब्दावली को सुरक्षित रखने के लिए साहित्य एक सशक्त साधन है। हमें इस आंचलिकता की भाषा की प्रासंगिकता से रूबरू रहना चाहिये। साहित्य सृजन में हमारा पहला ध्येय अपनी मातृ भाषा में रचना होता है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट में पंजाबी को भी उन भाषाओं में शामिल किया है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

आपकी कविताएं पढ़कर लगता है कि आपको अपनी जमीन अपने अंचल से गहरा जुड़ाव है, जिसके कारण आपकी कविताओं में पंजाबी मिट्टी की महक आती है। ऐसा क्या है, जो आपको खींच रहा है?

मेरा जन्म पंजाब के मुक्तसर जिले के एक छोटे से गांव 'नंदगढ़' में हुआ, पूर्व बाल्यकाल, जो भाषाई विकास की प्रारंभिक अवस्था है, उसी ठेठ ग्राम्य वातावरण में बीता, जहां स्वाभाविक रूप से पंजाबी और पंजाबियत का संचार हुआ, जो मेरी रचनाओं में सहज रूप से प्रकट होना स्वाभाविक है।

राजस्थान में पंजाबी कविता बारे में बताइये।

गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज रूहानी काव्य को शामिल करें तो राजस्थान में पंजाबी काव्य पंद्रहवीं सदी से ही लिखा जा रहा है, भक्त बेणी जी के तीन शब्द 'श्री राग', 'रामकली'

Scanned by CamScanner

और 'राग प्रभाती' में दर्ज है, भक्त धन्नाजी का एक शब्द 'राग आसा' में एक 'राग धनासरी' में तथा इसी तरह भगत पीपा जी का एक शब्द 'राग धनासरी' में शामिल है। गुरुनानक देव जी ने भी पुष्कर व कोलायत में साधुओं के साथ काव्य संवाद रचाया था। गुरु गोविन्द सिंह जी के भी दूदू (जयपुर), साहवा (चूरू), पुष्कर (अजमेर) प्रवास के दौरान रूहानी काव्य रचने के प्रमाण है। 'सोहनी महिवाल' की प्रेम गाथा के रचयिता साधु सदाराम हनुमानगढ़ जिले के गंधेली गांव में। 1861 में पैदा हुये थे।

गंगानगर जिले के ऐतिहासिक स्थल बुढ्ढा जोहड़ में रहते हुये संत फतेह सिंह ने पांच काव्य संग्रह 'प्यार सुनेहड़े', 'अणखी वलवले', 'मिठ्ठियां रमजां', 'मचदीयां लाटां', तथा 'चनण बण' लिखे। इनकी विषय वस्तु भी देशभक्ति एवं सिख समाज में सुधा तथा सर्वधर्म सम्भाव रहा। काव्य शैली की मुख्यत: प्रगीत रही, जिसमें दोहरा, बैंत, कबित्त, डियोड, अड़िल और सिरखण्डी आदि छंदों का प्रयोग किया गया।

इसके पश्चात् तीन दशकों तक राजस्थान में पंजाबी कविता की रचना का 'शून्य' काल रहा। स्वर्गीय डॉ. शिंदर ने 'अधूरा प्याला' (1967), 'जदों तुसीं परते' (1997) तथा 'एहु सुपनां नहीं' (1999) प्रकाशित करवाये। राजस्थान उर्दू अकादमी के चांद बिहारी पुरस्कार से सम्मानित हरबंस सिंह अक्स उर्दू व पंजाबी में समानान्तर लिख रहे हैं। गीतकारी में गुरदीप सिद्धु भी प्रयासरत हैं।

राजस्थान में पंजाबी साहित्य का क्या भविष्य है?

पंजाब का पड़ौसी राज्य होने के कारण राजस्थान का पंजाब के साथ सांस्कृतिक संवाद कई शताब्दी पुराना है, महाराजा गंगा सिंह के आह्वान पर 1920 के आस-पास पंजाब से सिख किसानों का गंगानगर, हनुमानगढ़ क्षेत्र में बसना जारी रहा, पंजाबियों ने राजस्थान को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने में भरपूर योगदान दिया, परंतु उनकी मातृभाषा के साहित्य व संस्कृति के प्रचार-प्रसार में न तो उनके समाज के अग्रणी लोगों का सहयोग और न ही समुचित राजकीय संरक्षण मिल पाया। इस कारण पंजाबी भाषा की साहित्यिक रचना में रचनाकारों का व्यक्तिगत योगदान ही रहा और स्थिति बेहतर न हुई तो रचनात्मक प्रोत्साहन की कमी के चलते विमुख हो सकते हैं।

पंजाब के साहित्य को प्रोत्साहन की एक भी संस्था नहीं। पंजाबी की एक भी पत्र-पत्रिका नहीं है। किसी भाषा के साहित्य को प्रफुल्लित करने के लिये उसे रोजगार से जोड़ना एक प्रमुख उपाय है। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर पंजाबी भाषा के अध्ययन हेतु शिक्षक तक उपलब्ध नहीं करवाये गये। एक तरफ पंजाबी विषय के योग्यताधारी शिक्षक बेरोजगार बैठे हैं तथा दूसरी तरफ सामान्य विषयों के शिक्षक पंजाबी भाषा का अध्यापन करवा रहे हैं। इससे भाषा अध्यापन की गुणवत्ता नहीं आयेगी तो साहित्य रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अगर अच्छा पढ़ा नहीं जाएगा तो अच्छा लिखा कैसे जाएगा। मदरसा की तर्ज पर 'गुरुमुखी पाठशालायें' खोली जायें तो

Scanned by CamScanner

पंजाबी भाषा की शिक्षा बालकों की प्रारंभिक अवस्था में ही हो सकती है। इस हेतु आर्थिक व अकादमिक सहायता पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली की पंजाब अकादमियों से ली जा सकती है। राजस्थान में पंजाबी अकादमी पिछले चार साल से कागजों में हैं, धरातल पर कार्य करने से पंजाबी भाषा एवं साहित्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

आपकी कविताएं पढ़कर कोई भी सुधी पाठक भावनाओं में बहे बगैर नहीं रह सकता। इतनी टीस, पीड़ा और विरह मन के अंतर्द्वंद्व को कागज पर उकेर कर आपने क्षेत्र के पंजाबी साहित्य में एक अलग मुकाम हासिल किया है, एकदम नये बिम्ब, आंचलिक मुहावरे सब कुछ निजी, इस रचना प्रक्रिया बाबत् कुछ बतायें।

कविता की रचना प्रक्रिया में 'आमद' और 'आवुर्दन' का विशेष महत्व है। आमद के तहत कविता स्वयं आपके पास चलकर आती है, 'आवुर्दन' में आप उसे अपने पास लाने का प्रयत्न या प्रयोजन करते हैं। पहली प्रक्रिया स्वाभाविक एवं कवितागत है, दूसरी कृत्रिम और आत्मघाती। कविता एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, इसमें प्रयत्न या प्रयोजन के लिए स्थान नहीं है। प्रयोजन में गणितीय संक्रिया का आभास होता है, जो 'क्राफट्समैनशिप' के अधिक नजदीक हैं। मैंने जब भी 'आवुर्दन' का सहारा लेकर कविता लिखनी चाही तो स्वाभाविकता की बलि दी और असफल रहा। ऐसी कवितायें पाठक को अपने बहाव के साथ नहीं ले जाती। गांव के जीवन में फैली निराशा, चिंता, बेबसी और गांव-गुवाड़ के खण्डहर हो रहे संस्कारों, गांव के ही परिदृश्य में बिखरे प्रतीकों के रूप में मेरी कविता का स्वभाव बनते रहे हैं, जो मेरा निजी अनुभव है, वही बिम्ब के रूप में कविता में उतरता रहा है। इसी कारण मेरी कविताएं सुभाषित शैली की अपेक्षा उच्चारणी भाषा की शैली की होती है, क्योंकि सुभाषित शब्दावली आमजन के स्वभाव में नहीं है। आमजन की भाषा पंडिताई से परे आंचलिक मुहावरों से पूरिपूर्ण होती है। अनुभव सिखाता है और मैं लगातार सीखना चाहता हूं। मैं अभी कविता का शिक्षार्थी हूं।

एक तरफ जहां लगभंग सभी कवि-साहित्यकार बाजारवाद-पूंजीवाद और अन्य व्याधियों पर काव्य सृजनरत है, वहीं दूसरी तरफ आप चुपचाप प्राकृतिक और मन की आंतरिक सतहों का वर्णन करते नजर आते हैं।

यहां पास से दूर का सिद्धांत लागू होता है। पहले स्वयं को जानना और स्वयं से संवाद रचाना तथा फिर अपनी 'इमीडियेट सराउंडिंग' से संवाद रचाना इस प्रक्रिया का अगला कदम है, स्वयं को जाने बिना भूमंडलीय समग्रता पर काव्य रचना दुरूह कार्य है। किसी प्रयोजन के साथ यह फैशन की श्रेणी में तो आ सकता है, परंतु काव्य की स्वभाविक रचना के तहत नहीं। 'मैं' से 'मैं' तक की काव्य यात्रा ही बहुत लंबी है। ऐसी स्थिति में किसी वाद पर कविता रचना आजकल लंबी टिप्पणियों और नारों के रूप में तो प्रकट हो रही है, परंतु इन 'व्याधियों' से हर बार काव्य संवाद की स्थिति पैदा हो ऐसा आवश्यक नहीं है।

Scanned by CamScanner

आपके काव्य में प्रयुक्त बिम्ब एकदम ताजा और नये होते हैं, इस बारे में बतायें।

अगर कोई रचनाकार सिर्फ शब्दों से खेलने का कार्य नहीं करे तो बिम्ब विधान नैसर्गिक रूप से ताजा ही प्रस्तुत होता है। जिस कवि की काव्य चेतना सिर्फ अंदर की तरफ है, वह अपने आस-पास के प्रति सचेत नहीं है तो वह एक विशेष किस्म के बिम्ब विधान का प्रयोग निरंतर करता रहता है। एक प्रकार की बिम्बावली को पाठकों की प्रशंसा मिलने पर लकीर पीटना शुरू कर देता है। पाठक बासी एवं पुनरावृत्त साहित्य की पहचान कर सकता है। पाठक स्वयं रचनाकार और आलोचक से श्रेष्ठ पारखी है। मैं किसी एक दायरे में, किसी वाद के वशीभूत होकर नहीं लिखना चाहता। दायरे से बाहर आने पर व्यापकता आती है, बिम्ब विधान में, शैली रूप में, विषय वस्तु में। कविता रोज नहीं लिखी जा सकती। यह साहित्य की कठिनतम विधा है।

समकालीन पंजाबी और हिंदी साहित्य को तुलनात्मक नजरिये से देखें तो पंजाबी साहित्य को कहां पायेंगे।

संख्यात्मक दृष्टि से देखें तो पंजाबी, हिन्दी से ज्यादा संख्या के देशों में प्रचलित है। जहां हिन्दी मुख्यत: भारतीय उपमहादीप में विस्तृत अखण्ड भू-भाग में बोली जाती हैं, वही पंजाबी के साथ विडम्बना यह है कि यह भाषा जहां भी है, वहां अल्पसंख्यक भाषा के रूप में है। सतत्, अखण्ड, विशाल भू-भाग के अभाव में पंजाबी भाषा का साहित्य उस गति से नहीं फैल पाया। सरकारी संरक्षण का अभाव, पंजाबी को केवल एक विशेष सम्प्रदाय की भाषा के रूप में दुष्प्रचारित करना, पंजाबी भाषियों द्वारा जनगणना के दौरान अपनी मातृभाषा न लिखवाना, पंजाबी समुदाय में भाषा के प्रति राजनैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अभाव, पंजाबी साहित्य का हिन्दी व अन्य भाषाओं में समुचित अनुवाद होना, पंजाबी साहित्य के संरक्षण की राष्ट्रीय संस्थाओं के अभाव आदि के कारण हिन्दी की तुलना में पंजाबी साहित्य बहुत पिछड़ गया है। पाकिस्तान में पंजाबी फारसीकरण की तथा भारत में संस्कृतकरण का शिकार रही है।

राजस्थान की हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का क्या कोई योगदान रहा, पंजाबी साहित्य के प्रसार में?

नगण्य। हां, राजस्थान की हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं स्वप्रेरणा से पंजाबी साहित्य को अनूदित कर राजस्थान पाठकों को पंजाबी साहित्य से रूबरू करवा सकती है। 'सम्बोधन' और 'शेष' पंजावी के महान रचनाकारों की रचनाओं का अनुवाद प्रकाशित करती रहती है- यह संतोष की बात है।

आपके काव्य में शांत सन्नाटा, चुप मगर इन सबके पीछे एक चीख होती है, रुदन होता है, मन का, आत्मा का...।

Scanned by CamScanner

डेल सो बनाया आप/मेलत सभा के बीच/लोगन कवि कीनो/खेल कर जानो है, तर्क से परे, भावनाएं और संवेग मानव के मूल में हैं। मन संवेगों का उलझा हुआ गुच्छा है। आत्मा की मुझे थाह नहीं। चुप से पहले रुदन है, चुप के बाद कविता।

होर ना फरोळ
मन दीयां तैहां
कदे फेर पावांगे
छड्ड चलियां दियां बातां
हुण ऐनी कु रही है
रात बाकी
हुण ऐनी कु बची है
बात बाकी...।

प्रस्तुति : किरसा परिवार

Scanned by CamScanner